डॉ० सुनीता कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
सोगरा कॉलेज, बिहारशरीफ
नालंदा।

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - प्रथम वर्ष - पत्र -(2)

खड़ी बोली गद्य का विकासक्रम एवं प्रवृत्तियाँ :

आधुनिक हिन्दी साहित्य की महती विशेषता है - गद्य का विकास। यही कारण है कि साहित्येतिहासकारों ने इसे आधुनिक काल के साथ गद्यकाल भी कहा है। इस काल के पूर्व पद्य के रूप में ब्रजभाषा का ही प्रचलन था। खड़ीबोली गद्य 'चंद छंद वर्णन की महिमा' में प्राप्त होता है। अमीर खुसरो की पहेलियों और मुकरियों में भी हिन्दी गद्य का रूप विद्यमान है। रामप्रसाद निरंजनी द्वारा रचित 'भाषा योगवशिष्ठ' की भाषा काफी परिमार्जित है। इन्हें प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक माना जा सकता है। इसके पश्चात् आधुनिक हिन्दी के प्रारंभिक चार लेखकों - सदल मिश्र, लल्लूलाल, सदासुखलाल तथा इंशाअल्लाह खाँ खड़ीबोली गद्य लेखन के समर्थ व्यक्तित्व (हस्ताक्षर) माने जाते हैं। सदल मिश्र और लल्लूलाल फोर्ट विलियम कॉलेज के भाषा मुन्शी के रूप में कार्यरत थे जबकि सदासुखलाल और इंशाअल्लाह खाँ स्वतंत्र रूप से हिन्दी की सेवा करते

Scanned with CamScanner

रहे। इसके अतिरिक्त पंडित दौलत राम और कुछ अज्ञात रचनाकारों के नाम भी महत्त्वपूर्ण है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने खड़ी बोली हिन्दी के प्रारंभिक रचनाकारों एवं रचनाओं का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है —

	रचना	रचयिता	रचनाकाल
1.	चन्द छन्द बरनन की महिमा	गंगकवि	सम्राट अकबर का काल
2.	भाषायोगवशिष्ट	रामप्रसाद निरंजनी	1741 ई०
3.	पद्मपुराण का भाषानुवाद	पं० दौलतराम	1766 ई०
4.	मंडोवर का वर्णन	अज्ञात	1773-1783 ई०
5.	सुखसागर	मुंशी सदासुख लाल 'नियाज'	1818 ई०
6.	रानी केतकी की कहानी	इंशाअल्लाह खां	1800 ई०
7.	प्रेमसागर	लल्लूलाल	1800 ई०
8.	नासिकेतोपाख्यान (उदयभान चरित)	सदल मिश्र	1800 ई०

भारतेन्दुपूर्व नाटक

रामायण महानाटक	प्राणचंद चौहान	1610 ई०
करुणाभरण	लछिराम	1657 ई०
शकुंतला	नेवाज	1680 ई०
आनंद रघुनन्दन	महाराज विश्वनाथ सिंह	1700 ई०
सभासार	रघुराय नागर	1700 ई०
रामकरुणाकर एवं	उदय	1840 ई०

Scanned with CamScanner

हनुमान नाटक

इंदरसभा	अमानत	1853 ई०
नहुष	गोपालचंद्र गिरिधर दास	1857 ई०

इसके अतिरिक्त ईसाई धर्मप्रचारकों यथा - विलियम केरे ने बाइबिल का हिन्दी और बंगला अनुवाद करवाया। स्वामी दयानंद सरस्वती, श्रद्धाराम फिल्लौरी, राजा शिवप्रसाद सिंह 'सितारेहिन्द' तथा राजालक्ष्मण सिंह आदि ने खड़ीबोली गद्य के विकास में सहयोग प्राप्त किया।

राजा शिवप्रसाद सिंह ने 'बनारस अखबार' निकाला। उन्होंने 'आलसियों का कीड़ा' 'राजा भोज का सपना', इतिहास 'तिमिरनाशक', 'मानव-धर्म का सार', 'उपनिषद्सार', 'भूगोल हस्तामलक' आदि पुस्तकें लिखी। इनकी भाषा हिन्दी-उर्दू मिश्रित थी।

राजालक्ष्मण सिंह आगरा के निवासी थे। उन्होंने 1861 ई० में 'प्रजाहितैषी' नामक पत्र निकाला तथा 1862 में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का हिन्दी अनुवाद किया। इसके अलावा पंजाब के बाबू नवीनचन्द्र राय ने भी हिन्दी की हिमायत की।

अतः मोटे तौर पर हिन्दी गद्य का प्रारंभ 1800 ई० के आसपास माना जानी चाहिए तथा हिन्दी गद्य के प्रवर्तकों में मुंशी

Scanned with CamScanner

सदासुखलाल के अतिरिक्त अन्य उन तीनों लेखकों को भी श्रेय मिलना चाहिए जो मुंशी सदासुख-लाल के अतिरिक्त अन्य उन तीनों लेखकों को भी श्रेय मिलना चाहिए जो सदासुख-लाल के समकालीन रहे।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पूर्व भारतेन्दुकाल में हिन्दी गद्य की दो शैलियाँ विकसित हो रही थी जिसमें पहला उर्दू-फारसी के शब्दों से युक्त हिन्दी गद्य जिसका प्रतिनिधित्व राजाशिवप्रसाद सिंह 'सितारे-हिन्द' कर रहे थे। दूसरा संस्कृत शब्दों से युक्त विशुद्ध हिन्दी जिसका प्रतिनिधित्व राजा-लक्ष्मण सिंह कर रहे थे।

———— x ———— x ————

Scanned with CamScanner

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - द्वितीय वर्ष :

छायावादोत्तर प्रबंध काव्यों की विशेषताएं -

1. मन : सत्यों की सूक्ष्म रेखाओं, चिंताओं के द्वन्द्वों, विघटित व्यक्तित्वों और क्षणानुभूतियों की प्रतीति संयुक्त मुक्त साहचर्य से अनुस्यूत भावबोध एवं शिल्प-विधान।

2. वर्तमान मूल्यों, बोधों, संवेदनाओं और आकांक्षाओं से युक्त काव्य।

3. अतीत में आधुनिक जीवन - मूल्यों की खोज तथा वर्तमान में अतीत का प्रेक्षण।

'विष्णुप्रिया' में आधुनिक नारी - सुलभ असंतोष या ईषत् विद्रोह की भावना की प्रधानता है। 'विक्रमादित्य' में परिवेशगत यथार्थ, जीवनदर्शन की सूक्ष्मता, प्रतिपाद्य की सरसता और छायावादी शिल्प - वैभव का समन्वित रूप - स्वरूप का संयोजन है। 'रश्मिरथी' में कर्ण के चरित्र को आधुनिक मानवतावाद के प्रकाश में उद्घाटित किया गया है।

"मैं उनका आदर्श कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे
पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा
मन में लिए उमंग जिन्हें चिर-काल कलपना होगा।"
ग्राम से नहीं विमुख होंगे जो दुख से नहीं डरेंगे।"

Scanned with CamScanner

— रश्मिरथी, दिनकर

'उर्वशी' प्रेम और सौंदर्य का काव्य है जिसका विधान 'दिनकर' ने बहुत व्यापक धरातल पर किया है। 'लोकायत' में पंत जी ने देश-विदेश के समस्त परिवर्तनों, बदले मूल्यों, पुरातन और नवीन के संघर्षों, भौतिक और आध्यात्मिक के द्वन्द्वों को परखने का प्रयास किया है। 'ऋतंबरा' में 'प्रभात' जी ने मानवता के आदर्श और मानव-सृष्टि के भविष्य को सांस्कृतिक तथा दार्शनिक धरातल पर उपस्थित किया है। 'कनुप्रिया' में भारती जी ने राधा के प्रेम - संवेदन के माध्यम से जीवन को समझने का प्रयास किया है।

'महामानव' ठाकुर प्रसाद सिंह जी की ऐसी प्रबंधात्मक कृति है जिसमें गांधीजी के जीवन के माध्यम से भारतीय जनजीवन के जागरण की गाथा गायी गयी है। 'द्रौपदी', 'उत्तरजय' 'आत्मजयी', 'संशय की रात', 'एक पुरुष और' में क्रमशः द्रौपदी की जीवनशक्ति, महाभारतकालीन युधिष्ठिर तथा अश्वत्थामा के द्वन्द्व को, आधुनिक संदर्भों में उभरे हुए जीवन-

को एक चिंतन जीवनयात्रा के प्रश्नों से जोड़ने तथा उसका उत्तर पाने की शाश्वत अकुलाहट (बेचैनी) का भाव, राम के मन के संशय को तथा 'एक पुरुष और' में आज के सामाजिक संदर्भों से टकराती हुई - जो मूलतः व्यक्ति के अस्तित्व-मूलक संकट से जूझती है और किसी विकल्प की खोज करती है।

इस अवधि में 'कुरुक्षेत्र' (दिनकर), 'उन्मुक्त' (सियाराम शरण गुप्त) तथा 'आर्यावर्त' (मोहनलाल महतो वियोगी) जैसे युद्ध काव्य भी लिखे गये।

—— × —— × ——

Scanned with CamScanner